भगत कबीर – सबद ३१

गगनि रसाल चुऐ मेरी भाठी ॥

रागु गउड़ी, भगत कबीर, गुरु ग्रंथ साहिब, ३२८

गगनि रसाल चुऐ मेरी भाठी ॥
संचि महा रसु तनु भइआ काठी ॥१॥
उआ कउ कहीऐ सहज मतवारा ॥
पीवत राम रसु गिआन बीचारा ॥१॥ रहाउ ॥
सहज कलालनि जउ मिलि आई ॥
आनंदि माते अनदिनु जाई ॥२॥
चीनत चीतु निरंजन लाइआ ॥
कहु कबीर तौ अनभउ पाइआ ॥३॥२७॥

सार: 'अनभउ' का अर्थ सीधा, प्रत्यक्ष अनुभव है, तुरंत होने वाला आभास और ऐसा ज्ञान जो केवल वैचारिक चिंतन से आगे ले जाता है। भक्ति परंपरा में अनभउ का विशेष महत्त्व है, यह केवल बौद्धिक समझ के बजाय सच्चाई के सीधे अनुभव पर बल देता है। यह ऐसे एहसास को महत्त्व देता है जो व्यक्तिगत अनुभव से पैदा होता है और तर्क, रीति-रिवाजों या विरासत में मिली मान्यताओं से ऊपर होता है। जहाँ बौद्धिक ज्ञान सच्चाई का वर्णन तो कर सकता है, वहीं अनभउ उसे पाने वाले व्यक्ति को परिवर्तित कर देता है, उन्हें सच्चाई के बारे में केवल जानने की स्थिति से आगे ले जाकर उसे पहचानने और उससे पूरी तरह एक हो जाने की अवस्था तक ले जाता है। इस तरह, ज्ञान कोई ऐसी चीज़ नहीं रह जाती जिसे उधार लिया गया हो, दोहराया गया हो या जिस पर बस विश्वास किया गया हो बल्कि यह ऐसी जागरूकता बन जाती है जो व्यक्ति के अस्तित्व का हिस्सा बन जाती है।

गगनि रसाल चुऐ मेरी भाठी ॥

आकाश, जो असीम ज्ञान का प्रतीक है, अपनी वास्तविकता का अमृत हमारी अंतरात्मा में धीरे-धीरे टपकाता है। यह रूपक बताता है कि हमारे आस-पास की असीम जागरूकता हमें बदलाव के लिए ज़रूरी अनुभव और समझ देती है।

संचि महा रसु तनु भइआ काठी ॥१॥

उस परम सार को इकट्ठा करके, शरीर ही आंतरिक बदलाव का पात्र और ईंधन बन जाता है। इससे पता चलता है कि मन और शरीर ऐसे पात्र हैं जिनके माध्यम से ज्ञान की आग हमारी सोच को निखारती है और हमें एकता का अनुभव कराती है। (१)

उआ कउ कहीऐ सहज मतवारा ॥

ऐसे व्यक्ति को सहजता के नशे में डूबा हुआ कहा जा सकता है। यह आध्यात्मिक नशे को दर्शाता है, जहाँ मन बाहरी चीज़ों से प्रेरित नहीं होता बल्कि संतोष से उपजे संतुलन की स्थिति में रहता है।

पीवत राम रसु गिआन बीचारा ॥१॥ रहाउ ॥

वह चिंतनशील ज्ञान और आंतरिक समझ के ज़रिए सर्वव्यापी उपस्थिति के सार को आत्मसात करते हैं। इससे पता चलता है कि आत्म-साक्षात्कार कर्मकांड या अंधविश्वास से नहीं बल्कि ऐसे चिंतनशील बोध से प्राप्त होता है जो अंततः जागरूकता में समाप्त हो जाता है। (१)(विराम)

सहज कलालनि जउ मिलि आई ॥

जब आंतरिक संतुलन प्राप्त होता है और उसे अपनाया जाता है तब यह छन्नी की तरह काम करता है। इससे पता चलता है कि सामंजस्य में जीने का अभ्यास हमारे अहं को छानने में मदद करता है जिससे हम अपने सच्चे स्वरूप का अनुभव कर पाते हैं।

आनंदि माते अनदिनु जाई ॥२॥

आनंदमय उल्लास की अवस्था में दिन और रात व्यतीत होते हैं। यह स्थिरता पाने के आनंद को दर्शाता है जहाँ बाहरी स्थिति तो बदलती रहती है लेकिन मन शांत रहता है। (२)

चीनत चीतु निरंजन लाइआ ॥

प्रत्यक्ष अनुभव के माध्यम से विवेक विकसित करते हुए अंतरात्मा निर्मल सत्य से जुड़ जाती है। यह उस सहज स्वाभाविक चेतना को दर्शाता है जो माया से अछूती रहती है और प्राकृतिक रूप से उस शाश्वत सत्य में स्थिर हो जाती है।

कहु कबीर तौ अनभउ पाइआ ॥३॥२७॥

कबीर कहते हैं कि तभी अनभउ अर्थात प्रत्यक्ष आंतरिक अनुभव के रूप में सत्य की अनुभूति प्राप्त होती है। यह चेतना के उस परम फल की ओर इशारा करता है जो शास्त्रों, तर्क, रीति-रिवाजों या विरासत में मिली मान्यताओं से नहीं बल्कि सीधे प्रत्यक्ष अनुभव से प्राप्त होता है। (३)(२७)

तत्त्व: भगत कबीर आंतरिक स्थिरता पाने की खुशी को व्यक्त करते हैं। इस अवस्था में, बाहरी स्थितियों के निरंतर बदलते रहने के बावजूद, मनुष्य की आंतरिक शांति अडिग रहती है। यह गहरी आंतरिक शांति, बाहरी प्रभावों पर निर्भर नहीं करती, यह ऐसे मन से उपजती है जो अपने भीतर अटूट सामंजस्य खोज लेता है। ऐसी स्थिरता केवल विरासत में मिली मान्यताओं को स्वीकार करने से नहीं बल्कि व्यक्तिगत अनुभव और आंतरिक विकास से आती है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com